हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन
का औचित्य

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

B. A. Part II Hindi Hons.

चूंकि इस काल का साहित्य एक विशेष रीति
या कहें ढर्रे पर रचा जा रहा था इसलिए इसे रीति
काल के नाम से अभिहित किया गया। साहित्य शास्त्र में
रीति का, जो कि एक काव्यांग है, बड़ा महत्व था निर्देश हुए

रखकर इस काल में काव्यसृजन हो रहा था। इसलिए भी इसे रीतिकाल का नाम दिया गया।

इसी बीच मुगलसाम्राज्य के कमजोर होने के तथा अंग्रेजों के भारत में आगमन के कारण देश का राजनैतिक परिवेश सर्वथा परिवर्तित हो गया। अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति के कारण छोटे राज्यों को अंग्रेजी शासन में मिला लिया गया जिससे छोटे राज्यों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इसका साहित्य पर यह प्रभाव पड़ा कि राजाश्रय में पलने वाले कवियों की संख्या अत्यन्त सीमित हो गयी और कालान्तर में समाप्त ही हो गयी। अंग्रेज अपने साथ आधुनिक मशीनी उपकरण भी लेकर आए थे जैसे छापाखाना, बिजली अन्य मशीनें इत्यादि जिसने सामाजिक जीवन को तो प्रभावित किया ही, साहित्य को भी प्रभावित किया। इसी प्रकार अंग्रेज अपने साथ अपना साहित्य लेकर आए थे तथा उसका प्रचार प्रसार भी किया। अपनी अलग शिक्षाप्रणाली को भी उन्होंने देश-भर में लागू किया। अपने अधिकारियों के लिए हिन्दी की किताबें तैयार करवायी तथा उनकी प्रशासनिक क्षमता बढ़ाने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता की स्थापना की। इसका प्रभाव यह पड़ा कि हिन्दी साहित्य में गद्य का वर्चस्व बढ़ने लगा। अब तक हम भारतीय केवल काव्य के अनुशीलन के ही अभ्यासी थे किन्तु अब गद्य की ही प्रधानता होती जा रही थी। इसी बीच हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रादुर्भाव हुआ। यह हिन्दी साहित्य के लिए ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुयी। भारतेन्दु ने साहित्य की प्रायः समस्त विधाओं में रचना की - नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबन्ध, और कविता में तो उन्होंने अपनी श्रेष्ठ रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उन्हीं के समकक्षी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने भी हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसके बाद हिन्दी साहित्य में आचार्य महावीर

notes
Phone
email
website

प्रसाद द्विवेदी का आगमन हुआ। इन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से न केवल हिंदी साहित्य का निर्माण किया वरन् साहित्यकारों का भी निर्माण किया। हिंदी साहित्य के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं सरस्वती पत्रिका का ऐतिहासिक महत्व है।